eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

भारत चीन सम्बन्धः समकालीन परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 प्रियंका त्रिपाठी[1]
[1]शोधार्थी– राजनीति विज्ञान, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर उ0प्र0

Received: 20 Jan 2026, Accepted: 25 Jan 2026, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2026

Abstract

भारत पहला ऐसा गैर समाजवादी देश था जिसने **01 अप्रैल, 1950** को चीन जनवादी गणराज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित किये, उस समय नेहरु जी प्रधानमंत्री थे और उन्होंने 1954 में चीन का दौरा किया। भारत ने हमेशा चीन पर भरोसा दिखाया पर चीन कभी भी उस विश्वास पर खरा नहीं उतरा, 1954 में नेहरु चीन की यात्रा करते हैं बदले में चाइना 1962 युद्ध जैसे संघर्ष की स्थिति पैदा कर भारत के विश्वास पर गहरा अघात करता है। इसके बाद भी भारत चाइना सहित अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ एक विनम्र सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास करता है। चाइना के अघात को भूलते हुए 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने द्विपक्षीय सम्बन्धों में सुधार का प्रयास किया इसी तरह 1993 में प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने चीन की मात्रा कर वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अमन चैन के लिए करार पर हस्ताक्षर किया यह और बात है कि आज तक वास्तविक नियंत्रण रेखा पर अमन चैन स्थिरता जैसा कुछ वास्तविक प्रतीक नहीं होता देखा जैसे तो दोनों के प्रमुखों ने एक दूसरे देशों की यात्रा करके यह जरूर प्रयास किया कि दोनों देशों से सम्बन्ध सुधरे पर वास्तविक दौर पर सम्बन्ध सुधार वैसे ही रहा जैसे 1954 में नेहरु जी ने चीन की यात्रा कि बदले ने चीन ने 1962 का युद्ध भारत को उपहार में दिया पर समय बदल चुका है भारत की स्थिति किसी भी पहलू पर कैसी है ये तो चाइना अच्छी तरह जानता है लेकिन उसके बाद भी चीन ऐतिहासिक गलतियों को दोहराता है, चाइना जहाँ अपनी ऐतिहासिक गलतियाँ बार–बार करता है भारत वही अपनी–अपनी अच्छाई की नीतियाँ उसके साथ बार–बार दोहराता है। यदि दोनों देशों के राष्ट्र प्रमुखों की यात्रा को ध्यान दिया जाऐ, तो प्रधानमंत्री के तौर पर वाजपेयी जी 2003 में चीन की यात्रा करते हैं, प्रधानमंत्री वे जियाबाओ 2005 और 2010 में भारत की यात्रा करते है, राष्ट्रपति हू जिंताओं 2006 भारत की यात्रा की, प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह 2008 और 2013 में चीन की यात्रा की, प्रधानमंत्री ली किक्यांग ने 2013 में भारत की यात्रा की, राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने 2014 में भारत की यात्रा की अब यहाँ देखने वाली बात है कि केवल ये सभी यात्रायें चाइना की तरफ से औपचारिक हो रही क्योंकि कि चाइना की भूमिका नियंत्रण रेखा पर आज भी वैसे ही है जैसे 1962 में था। यह भारत की अपनी शान्ति प्रियता की नीति है कि वह किसी भी बड़े संघर्ष को अपने धैर्य के चलते नाकाम कर देता है। वरना नियंत्रण रेखा पर चाइना जैसी गतिविधि को अंजाम देता है अगर भारत अपनी धैर्यता का परिचय नहीं देता वो जरूर चाइना की नकारात्मक भूमिका सीमा पर किसी बड़े संघर्ष का रूप ले लेती है।

मुख्य शब्द : शान्ति प्रियता की नीति, औपचारिक वार्ता नियंत्रण रेखा पर संघर्ष की स्थिति, भारत का सहयोगात्मक रवैया।

Introduction

भारत चीन सम्बन्ध समकालीन परिप्रेक्ष्य में ऐतिहासिक तौर पर देखा जाए तो नेहरु जी की 1954 में चीन यात्रा प्रभावशाली नहीं कही जा सकती क्योंकि 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया जो

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

सुनियोजित थी। फिर 1988 से जब प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने चीन की यात्रा की तो सम्बन्धों का नया अध्याय जरूर आरम्भ हुआ उसके बाद एक सिलसिला सा शुरू हुआ समय–समय पर दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्ष, प्रधानमंत्री एक दूसरे के देशों की यात्रा करते दिखे। भारत चाइना सम्बन्ध में अगर कुछ सकारात्मक है तो वह यह कि दोनों देशों में व्यापारिक सम्बन्ध बहुत बड़े स्तर पर है और इस स्तर पर दोनों एक दूसरे की जरूरत है। जहाँ तक भारत की बात है तो यह भारत की नीति रही कि वह अपने पड़ोसियों के साथ सम्बन्ध को बेहतर रखने का प्रयास हमेशा करता है, पर चाइना की मानसिकता कभी भी भारत को लेकर स्पष्ट नहीं दिखी ऐसा इसलिए क्योंकि चाइना ने व्यापारिक सम्बन्धों को केवल लेन–देन के स्तर पर रखा जिसमें भावनाएं कभी शामिल नहीं किया जबकि भारत ने नेहरु काल से अब तक उसके साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने का प्रयास किया, क्योंकि भारत इस बात को अच्छी तरह जानता है कि नियंत्रण देखा पर चाइना का सहयोग नकारात्मक है ऐसे में भारत यदि चाइना की तरह ही उससे पेश आता है तो यह दोनों देशों के नागरिकों के लिए अच्छा नहीं होगा वैसे भी आज हम जिस टाइम पीरियड में हैं विकास हमारा लक्ष्य है, प्रगति हमारा पथ है हम अपने देश के बेकसूर नागरिकों युद्ध जैसी त्रासदी नहीं दे सकते तो यहाँ भरत अपनी शान्ति प्रियता को बनाये रखने की चेष्ठा 1962 से लेकर अब तक कर रहा पर चाइना का रवैया भारत को हमेशा नियंत्रण रेखा पर उकसाने वाला होता है जैसे अभी हाल के कुछ वर्षों में चाइना का रवैया नियंत्रण रेखा पर बेहद नकारात्मक रहा।

जून 2020 गलवान में भारत व चीन के बीच संघर्ष की जो स्थिति सामने आयी उसमें हमारे देश भारत के 20 सैनिक मारे गये जबकि चाइना कुछ भी स्पष्ट करने से बचता रहा फिर कई महीनों बाद उसने यह स्पष्ट किया कि उसके भी सैनिक मारे गये हैं जबकि गलवान संघर्ष से पहले दोनों देशों के बीच सैन्य स्तर पर कई वर्ताएं हुई पर चाइना का रवैया कभी भी इस चीजों को लेकर स्पष्ट नहीं रहा है। अतः संघर्ष जैसी स्थिति पैदा हुई। कई अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत ने चाइना के नकारात्मक रवैये की आलोचना की, अगस्त 2022 में भारतीय विदेश मंत्री श्री जयशंकर थाईलैण्ड संयुक्त आयोग की बैठक के दौरान चाइना के व्यवहार को उन्होंने तब व्यक्त किया जब वह चुलालोंग कार्न विश्वविद्यालय में, इण्डियाज विजन ऑफ इण्डो–पैसिफिक पर व्याख्यान दे रहे थे उन्होंने कहा कि भारत चीन सम्बन्ध अत्यन्त कठिन दौर से गुजर रहा और जब तक चाइना भारत के साथ नहीं आयेगा तब तक एशियन सेंचुरी नहीं होगी साथ में उन्होंने यह भी कहा कि चीन सीमा पर जो भी कर रहा उससे दोनों के सम्बन्ध ठीक न होकर खराब ही हो रहे हैं। जबकि एशियन सेंचुरी के लिए दोनों का सम्बन्ध स्वस्थ्य होना आवश्यक है। इस प्रकार चाइना के हर व्यवहार को नजर–अन्दाज कर भारत चाइना को गले लगाने के लिए तत्पर दिखता है पर चीन कभी भी भारत के प्रति भावनात्मक सहयोग नहीं करता। भारत सीमा पर आतंकवाद से भी परेशान है और जब भारत ने यू0एन0 के मंच से इन आतंकियों या आतंकी समूहों को प्रतिबन्धित करने की बात की चाइना की भूमिका यहाँ भी नकारात्मक रही उसने कभी भी इस मुद्दे पर भारत का समर्थन नहीं किया कि भारत आतंकवाद से पीड़ित है इतना ही यदि भारत ने कभी किसी आतंकी विशेष का नाम भी लिया तो भी चाइना ने भारत का सहयोग नहीं किया। जबकि यहाँ उल्लेखनीय है कि चाइना के साथ भारत का सम्बन्ध मात्र व्यापारिक ही नहीं है बल्कि शैक्षिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध भी भारत चाइना के साथ रखता है इसके बाद भी चाइना कभी भी भारत का भावनात्मक सहयोगी नहीं बन पाया। पिछले कुछ वर्षों में भारत और चीन के बीच व्यापार और आर्थिक सम्बन्धों में बहुत प्रगति हुई है। सन् 2021–22 में दोनों देशों के बीच 115 अरब डॉलर का व्यापार हुआ। इसी तरह दोनों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धी भी बहुत अच्छे हैं, भारत चीन के बारे में कहा

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

जाता है कि दोनों ही समाज मात्र नहीं है वे सभ्यताएं हैं ये सटीक तौर पर नहीं कहा जा सकता कि दोनों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान कब आरम्भ हुआ लेकिन यह स्पष्ट है कि दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक आदान–प्रदान अत्यन्त प्राचीन है इसी प्रकार दोनों देशों के बीच शैक्षिक स्तर पर भी सम्बन्ध है दोनों देशों के विद्यार्थी एक दूसरे के देश में जाकर शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अब भारत की तरफ से चीन के साथ सम्बन्ध हमेशा बेहतर बनाने का प्रयास किया गया लेकिन चीन ने कभी भी भारत को अपना पूर्ण सहयोग नहीं दिया पर जैसा कि श्री जयशंकर कहते हैं कि ''एशियन सेंचुरी के लिए यह आवश्यक है कि भारत व चीन साथ आये तो अब यह जरूरी है कि चाइना इस बात को समझे कि आपसी सहयोग में भावनात्मक ईमानदारी भी अत्यन्त आवश्यक है और इस बात को समझकर चीन भारत को सहयोग करे।

लेकिन चीन आरम्भ से ही भारत को भावनात्मक स्तर पर सहयोग नहीं किया। चीन ने भारत के किसी भी उद्देश्य को आरम्भ से ही सकारात्मक दृष्टि से नहीं देखा उसकी दृष्टि हमेशा भारत के लिए नकारात्मक रही दोनों के बीच विवाद की शुरुआत तिब्बत से होती है, जिसमें भारत की कोई गलती नहीं थी बस भारत ने चाइना की उस गलत इच्छा शक्ति का समर्थन नहीं किया जिसके चलते चाइना तिब्बत की स्वायत्ता को सीमित कर रहा था भारत कभी इस पक्ष में नहीं था कि चाइना तिब्बत के लिए नकारात्मक रहे और एक अच्छे पड़ोसी की तरह भारत ने तिब्बत का साथ दिया और यही से चाइना ने भारत पर दबाव बनाना आरम्भ किया। भारत की भूमिका हर स्तर पर चाहे पड़ोसी देशों के साथ हो या अन्तर्राष्ट्रीय देशों के साथ भारत हमेशा न्यायपूर्ण व्यवहार भी अपनाता है ये इतिहास है भारत का, जिसे चाइना आज तक नहीं समझ सका। लेकिन यह भी सत्य है कि 1962 का दौर कुछ और या आज का कुछ और है भारत सक्षम है चाइना से किसी भी स्तर पर निपटने के लिए लेकिन भारत बचता है किसी बड़े संघर्ष से क्योंकि ''युद्ध भारत की प्रकृति नहीं'' अहिंसा शान्ति प्रियता अपील प्रतिनिधि मण्डल, वर्ताए यह कुछ ऐसे बिन्दु है जिन पर भारत सबसे ज्यादे भरोसा करता है।

जब चीन ने तिब्बत की स्वायत्ता को पूरी तरह समाप्त कर दिया और भारत के साथ लगती उत्तरी सीमाओं पर चीनी सेना तैनात की तो भारत ने उसकी वैधानिक स्थिति को स्वीकार कर लिया उस समय के वर्तमान प्रधानमंत्री नेहरु जी ने तब कहा था ''हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम महान देश चीन के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखें, हमारी सहानुभूति तब भी तिब्बत की जनता के साथ है, हम तिब्बत के साथ भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध की इच्छा रखते हैं। नेहरु जी के इस कथन से स्पष्ट है कि भारत अपने पड़ोसियों के साथ आदर सम्मान और न्यायपूर्ण व्यवहार रखता है। भारत ने केवल चाइना की वैधानिक स्थिति को स्वीकार किया लेकिन कहीं पर भी चाइना के उस क्रूर व्यवहार का समर्थन नहीं किया जो व्यवहार चाइना तिब्बत के लिए उपयोग में ला रहा था। चाइना कहता नहीं है लेकिन उसका रवैया एशिया में हमेशा अमेरिका जैसा रहा अर्थात् जो हमारे नीति–अनीती में साथ नहीं वह हमारा दुश्मन है ये चाइना का एशिया में सोच है। चाइना अपने अर्थ बल पर पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल, म्यांमार जैसे देशों को नियंत्रण ने ले रहा है पर वह अच्छी तरह जानता है कि भारत चाइना के जादुई सम्मोहन में आने वाले देश नहीं भारत किसी भी पहल पर अन्याय का साथ नहीं देता है। भारत समयानुसार चुप रह सकता है, विरोध कर सकता है पर वह अन्याय के सामने झुक नहीं सकता यह चाइना अच्छी तरह जानता है। 1999 के बाद भारत चाइना सम्बन्ध में जरूर कुछ सुधार दिखे पर वह सुधार चाइना के व्यवहार के देखते अवसरवादी व्यवहार कहा जा सकता है। भारत परमाणु परीक्षण करता है और फिर उत्पन्न तनाव को कम करने के लिए चाइना के साथ सम्बन्धों के सुधार का प्रयास करता है और तब चाइना का रूप सकारात्मक दिखता है भारत का प्रयोजन

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

भी सफल ही रहा क्योंकि भारत ने कभी भी परमाणु परीक्षण विरोधी सन्धि पर हस्ताक्षर यह कह कर नहीं किया कि एशिया के देश या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो देश परमाणु सम्पन्न है उनके समक्ष भारत अपनी सुरक्षा को लेकर कैसे आश्वस्त हो सकता है। इसलिए भारत परमाणु परीक्षण करता है और जब वह चाइना की ओर मैत्रीपूर्ण व्यवहार हेतु आगे बढ़ता है तो चाइना का रूख स्वभाविक हो जाना समय की आवश्यकता थी जैसा लगता है। समय–समय पर चीन के वक्तव्य भी उसकी अवसरवादिता को दर्शाते रहे जैसे 1999 के दौर में जब भारत चाइना से सम्बन्ध सुधार की गुजाइंश कर रहा था तो उस समय चीन के विदेश मंत्री का यह कथन ध्यान देने योग्य है वह कहते हैं कि ''एशिया में दो महत्वपूर्ण देश पाकिस्तान और इण्डिया है जिनसे चाइना अपने सम्बन्धों में कुछ सुधार का इच्छुक है।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study) – भारत चीन सम्बन्ध 21वीं सदी की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के सबसे जटिल और महत्वपूर्ण द्विपक्षीय सम्बन्धों में से एक हैं। दोनों देश विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ, उभरती महाशक्तियाँ तथा एशिया की राजनीतिक–आर्थिक दिशा को प्रभावित करने वाले प्रमुख राष्ट्र हैं। सीमा विवाद, डोकलाम (2017), गलवान घाटी संघर्ष (2020), व्यापारिक असंतुलन, सामरिक प्रतिस्पर्धा तथा बहुपक्षीय मंचों (BRICS, SCO) में सहयोग इन सभी कारकों ने इस सम्बन्ध को बहुआयामी बना दिया है। अतः समकालीन वैश्विक शक्ति संतुलन के संदर्भ में भारतदृचीन सम्बन्धों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या– (Statement of the Problem) – भारत चीन सम्बन्ध सहयोग और संघर्ष के द्वंद्व से ग्रस्त हैं। एक ओर आर्थिक सहयोग, बहुपक्षीय मंचों में सहभागिता और जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों पर समन्वय है, वहीं दूसरी ओर वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर तनाव, सामरिक अविश्वास, चीन पाकिस्तान गठजोड़ और हिंद प्रशांत क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा विद्यमान है। समस्या यह है कि दोनों देश आपसी विश्वास की कमी के कारण स्थायी रणनीतिक साझेदारी विकसित नहीं कर पा रहे हैं।

1.3 अध्ययन का औचित्य (Justification of the Study)– यह अध्ययन निम्न कारणों से औचित्यपूर्ण है–

1. एशिया की शक्ति संरचना पर भारत चीन सम्बन्धों का गहरा प्रभाव
2. भारत की विदेश नीति और रणनीतिक स्वायत्तता के संदर्भ में चीन की भूमिका
3. सीमा विवादों के शांति समाधान की संभावनाओं का विश्लेषण
4. आर्थिक सहयोग बनाम सामरिक प्रतिस्पर्धा का द्वंद्व
5. वैश्विक बहुध्रुवीय व्यवस्था में दोनों देशों की भूमिका
6. यह शोध नीति–निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य **(Objectives of the Study)**–

1. भारत चीन सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त विश्लेषण करना
2. समकालीन काल में उत्पन्न प्रमुख विवादों का अध्ययन करना
3. आर्थिक, राजनीतिक एवं सामरिक आयामों का मूल्यांकन करना
4. क्षेत्रीय और वैश्विक राजनीति में भारत चीन प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण करना
5. भविष्य में सहयोग की संभावनाओं और चुनौतियों की पहचान करना

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

1.5 शोध–प्रश्न (Research Questions)–

1. समकालीन भारत चीन सम्बन्धों के प्रमुख निर्धारक तत्व कौन–से हैं?
2. सीमा विवाद दोनों देशों के सम्बन्धों को किस प्रकार प्रभावित करता है?
3. आर्थिक सहयोग और व्यापारिक असंतुलन का द्विपक्षीय सम्बन्धों पर क्या प्रभाव है?
4. चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (BRI) पर भारत की आपत्तियों के कारण क्या हैं?
5. भविष्य में भारत चीन सम्बन्ध सहयोग की दिशा में कैसे बढ़ सकते हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ (Scope and Limitations)–

परिधि–

- अध्ययन मुख्यतः 2000 से 2025 तक की अवधि पर केन्द्रित है
- राजनीतिक, सामरिक और आर्थिक पहलुओं का विश्लेषण
- द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय मंचों की भूमिका

सीमाएँ

- गोपनीय सामरिक सूचनाओं का अभाव
- मीडिया स्रोतों पर आंशिक निर्भरता
- निरंतर बदलती भू–राजनीतिक परिस्थितियाँ

1.7 परिकल्पना (Hypotheses)

1. भारत चीन सम्बन्धों में सीमा विवाद सबसे बड़ा अवरोधक तत्व है।
2. आर्थिक परस्पर निर्भरता के बावजूद सामरिक अविश्वास बना हुआ है।
3. बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत और चीन प्रतिस्पर्धी सहयोग (Competitive Cooperation) की नीति अपनाएंगे।

1.8 शोध प्राविधि (Research Methodology)

इस अध्ययन में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति अपनाई गई है।

डेटा के स्रोत– द्वितीयक स्रोत

पुस्तकें, शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्टें, नीति दस्तावेज, पत्र–पत्रिकाएँ

विश्लेषण विधि– तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण

दृष्टिकोण– अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का यथार्थवादी एवं उदारवादी दृष्टिकोण

1.9 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

- जॉन गार्वर ने भारत चीन सीमा विवाद को ऐतिहासिक असुरक्षा से जोड़ा है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

- अलास्टेयर इयान जॉनस्टन ने चीन की रणनीतिक संस्कृति का विश्लेषण किया है।
- सी. राजा मोहन ने भारत चीन सम्बन्धों को एशियाई शक्ति संतुलन के संदर्भ में देखा है।
- डेविड मलोन ने बहुपक्षीय मंचों में भारत चीन सहयोग की संभावनाओं पर प्रकाश डाला है।
- भारतीय लेखकों ने गलवान संघर्ष के बाद बदलती भारत नीति का विश्लेषण किया है।

देखा जाए तो दोनों देशों के बीच केवल व्यापारिक सम्बन्ध ही है बाकी किसी भी तरह का सम्बन्ध दोनों देशों के बीच सकारात्मक नहीं दिखता ऐसे कई मुद्दे हैं जहाँ दोनों के बीच असहमति खुलकर आती है जैसे परमाणु परीक्षण पर रोक तथा CTBT पर हस्ताक्षर करने के मामले में असहमति उसके अलावा पाकिस्तान को चाइना जिस तरह की सहायता दे रहा केवल उसके पीछे एक ही मकसद है चाइना का कि पाकिस्तान जितना सशक्त होगा वह उतना ही भारत को परेशान करेगा पाकिस्तान द्वारा जिस प्रकार का रवैया भारत के लिए होता है उसमें चाइना का सबसे बड़ा सहयोग है। पाकिस्तान के बाद चाइना ने भारत को परेशान करने के लिए अब नेपाल का भी उपयोग कर रहा भारत के पड़ोसी देशों की जिस प्रकार की घेराबंदी चाइना कर रहा उसके पीछे उसका एकमात्र उद्देश्य भारत पर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाना है। पाकिस्तान व नेपाल उसके इस उद्देश्य पूर्ति में बहुत सहायक है। चाइना द्वारा इस तरह के मानसिक दबाव के बाद भी भारत ने अपनी शान्ति प्रियता और अहिंसा के आचरण को कभी नहीं छोड़ा। अतः ऐसे कई मुद्दे आये जहाँ चाइना ने भारत के साथ सहमति व्यक्त किया हाल के दशकों में देखा जाये तो चीन ने कारगिल संघर्ष के दौरान पाकिस्तान पर पीछे हटने का दबाव बनाया था। 2004 में उसने सिक्किम को भारत का अभिन्न अंग माना और इन दशकों में दोनों को लगा कि एक दूसरे के साथ तनाव कम करने में ही भलाई, भारत तो पहले से ही इस बात को स्वीकार कर रहा हाँ चाइना जरूर इस बात को मजबूरी में स्वीकार करता है कि भारत के साथ रिश्ते ठीक करने में ही उसकी भलाई है।

भारत चीन सम्बन्ध के संदर्भ में क्वाड का वर्णन भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्वाड जो कि चार देश अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया व भारत का संगठन है जिसका प्राथमिक उद्देश्य स्वतंत्र मुक्त इंडो–पैसिफिक क्षेत्र के लिए सहयोग सुनिश्चित करना और क्वाड समूह अस्तित्व में इसलिए आता है क्योंकि काफी समय से चाइना वर्चस्ववादी नीति पर कार्य कर रहा है। अतः 2007 में क्वाड अस्तित्व में आया जो कहीं न कहीं चाइना की नीतियों को अघात करने वाला समूह है और अब चाइना अमेरिका, जापान, आस्ट्रेलिया व भारत के इस समूह के विरूद्ध चुप रहने वाला देश नहीं हो सकता क्योंकि उसे पता है कि उस पर नियंत्रण हेतु यह संगठन कार्य कर रहा। अब रही बात भारत की चाइना जब भी भारत को इस तरह के किसी में संगठन में सक्रिय होते देखता है तो वह किसी न किसी तरह भारत को उलझाने का प्रयास करता है और यह उलझाने सीमा विवाद के रूप में भी आता है। चीन क्वाड की तुलना नाटो से करता है कोविड के दौरान और उसके बाद चीन की जो विवादास्पद छवि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बनी विश्व के देश चीन पर लगाम लगाने की कोशिश करने लगे ऐसे में चाइना क्यों चुप बैठता उसने भी जहाँ उसे लगा वह देशों को नियन्त्रित कर सकता है उसने किया उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो कोविड काल में अमेरिका चाइना के बीच व्यापारिक युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी हाँ यह जरूर कि अमेरिका में नये राष्ट्रपति **'जो बाइडन'** के आने के बाद दोनों देशों की आक्रमकता में कमी आयी इसी प्रकार चाइना ने भारत को भी नियन्त्रित करने का प्रयास उसी दौर में किया जब वह अमेरिका से व्यापारिक युद्ध कर रहा था तो वह भारत पर भी दबाव के मकसद में सीमा पर तनाव की स्थिति पैदा कर रहा था ये है चाइना की विध्संक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

नीतियाँ चाइना सुधरेगा या नहीं यह तो भविष्य की बात है पर भारत चाइना परिदृश्य में पूरी दुनिया को यह देखने की जरूरत है कि वह चाइना की विध्संक नीतियों के बीच संतुलन कैसे स्थापित करते है। क्वाड की बात 2007 में जापान ने किया। 2017 में यह सक्रिय हुआ और कोविड की स्थिति के बाद क्वाड की सक्रियता को जब उच्च करने की बात की जाने लगी तो चाइना को लगा कि वह देश जो क्वाड की सहभागिता में सक्रिय है उन्हें नियन्त्रित किया जाए और फिर उसने भारतीय सीमा विवाद को तीव्र किया और अमेरिका के साथ व्यापारिक युद्ध में सक्रिय सहभागिता दिखाई साथ ही आस्ट्रेलिया को उसने शाब्दिक धमकी दी। अतः यहाँ यह स्पष्ट है कि चाइना में कितना सुधार होगा यह तो नहीं कहा जा सकता पर इतना जरूर है कि भारत उसके साथ कैसे संतुलन स्थापित करेगा यह एक सोचने वाली बात है।

निष्कर्ष– समकालीन अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में भारत चीन सम्बन्ध एशिया की शक्ति–राजनीति का केंद्रीय तत्व बन चुके हैं। दोनों देश जनसंख्या, आर्थिक क्षमता, सैन्य शक्ति और भू–राजनीतिक प्रभाव के दृष्टिकोण से उभरती महाशक्तियाँ हैं। अतः इनके पारस्परिक सम्बन्ध केवल द्विपक्षीय महत्व तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे वैश्विक शक्ति–संतुलन, हिंद–प्रशांत रणनीति तथा बहुध्रुवीय विश्व–व्यवस्था को भी प्रभावित करते हैं। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारत चीन सम्बन्धों में सहयोग और प्रतिस्पर्धा का द्वंद्व निरंतर बना हुआ है। एक ओर दोनों देश BRICS, SCO, G–20 जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग करते हैं, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक आर्थिक सुधार जैसे मुद्दों पर समान दृष्टिकोण रखते हैं; वहीं दूसरी ओर सीमा विवाद, वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर सैन्य तनाव, चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा, तथा हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सामरिक प्रतिस्पर्धा संबंधों में अविश्वास को बढ़ाते हैं। विशेष रूप से 2020 के गलवान संघर्ष के बाद द्विपक्षीय सम्बन्धों में एक संरचनात्मक परिवर्तन परिलक्षित होता है। भारत ने चीन के प्रति अपनी नीति में अधिक सतर्कता और सामरिक संतुलन की रणनीति अपनाई है। "रणनीतिक स्वायत्तता" की नीति के अंतर्गत भारत एक ओर क्वाड जैसे मंचों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है, तो दूसरी ओर बहुपक्षीय मंचों पर चीन के साथ संवाद भी बनाए हुए है। यह दर्शाता है कि भविष्य में दोनों देशों के सम्बन्ध "प्रतिस्पर्धी सहयोग" के रूप में विकसित हो सकते हैं।

आर्थिक दृष्टि से दोनों देशों के बीच व्यापक व्यापारिक संबंध हैं, किन्तु व्यापार असंतुलन भारत के लिए चिंता का विषय है। यह असंतुलन केवल आर्थिक नहीं, बल्कि रणनीतिक निर्भरता का संकेत भी देता है। इसलिए दीर्घकालिक स्थिर सम्बन्धों के लिए आर्थिक संतुलन, आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण और पारदर्शी निवेश नीति आवश्यक है। इस शोध के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत चीन सम्बन्धों का भविष्य तीन प्रमुख कारकों पर निर्भर करेगा–

सीमा विवाद का शांतिपूर्ण समाधान,
पारस्परिक विश्वास निर्माण की प्रभावी प्रक्रिया,
क्षेत्रीय एवं वैश्विक मंचों पर संतुलित सहभागिता।

यदि दोनों देश संवाद, कूटनीति और पारस्परिक सम्मान के सिद्धांतों का पालन करें, तो एशिया में स्थिरता और विकास की नई संभावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। किन्तु यदि अविश्वास और सामरिक प्रतिस्पर्धा बढ़ती रही, तो यह संबंध क्षेत्रीय अस्थिरता का कारण बन सकते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 09, Issue 01, January 2026

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत चीन सम्बन्ध न तो पूर्णतः संघर्षपूर्ण हैं और न ही पूर्णतः सहयोगात्मक; बल्कि वे एक जटिल, बहुआयामी और गतिशील प्रक्रिया के रूप में विकसित हो रहे हैं, जिनका प्रभाव न केवल एशिया बल्कि सम्पूर्ण विश्व–राजनीति पर पड़ेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अप्पादोराई, ए0: एसेज इन इण्डियन पॉलिटिक्स एण्ड फारेन पॉलिसीज, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0, नई दिल्ली।
2. अप्पा दोराई, ए0 (सम्पादित) : सेलेक्ट डाक्यूमेन्ट्स ऑन इंडियाज फारेन पालिसी एण्ड रिलेशंस (1947–1972) आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली 1991
3- India chinaties going through extremely difficult phase: Jai Shankar – The Hindu. (https://www.thehindu.com) Aug, 18, 2022.
4- भारत व चीन विवाद : सीमा पर तनाव (https://www.bbc.com/hindi) Dec, 13, 2022.
5- Quad Vs. China – चीन को फूटी आँख क्यों नहीं सुहाता क्वार्ड? (https://www.Jagran.com) May, 25 2022.
6- Garver, John W. Protracted Contest: Sino-Indian Rivalry in the Twentieth Century
7- University of Washington Press, 2001 ISBN: 978-0295980478
8- Mohan, C. Raja, Samudra Manthan: Sino-Indian Rivalry in the Indo-Pacific Oxford University Press, 2012, ISBN: 978-0198078221
9- Malone, David M. Does the Elephant Dance? Contemporary Indian Foreign Policy Oxford University Press, 2011, ISBN: 978-0199732320
10- Johnston, Alastair Iain, Social States: China in International Institutions, Princeton University Press, 2008, ISBN: 978-0691135454
11- Pant, Harsh V. , Indian Foreign Policy: An Overview Manchester University Press, 2016, ISBN: 978-0719097516